रीढ़ की हड्डी (जगदीशचंद्र माथुर)

पाठ का सारांश

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी जगदीशचंद्र माथुर का एक भावनाप्रधान सामाजिक एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में वर्तमान युग की विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें कन्या के पिता को वर-पक्ष के सामने स्वयं को दीन-हीन और छोटा मानने को विवश होना पड़ता है। बी०ए० पास सुशिक्षित कन्या को भी मात्र विवाह करने के उद्देश्य से एक साधारण पढ़ी-लिखी लड़की के रूप में प्रस्तुत करना पिता की मज़बूरी है। प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु इस प्रकार है–

दकियानूसी परिवार से उमा का उसके पिता द्वारा संबंध जोड़ने का प्रयास–मध्यमवर्गीय दंपती रामस्वरूप और प्रेमा, अपनी पुत्री उमा का विवाह अपने परिचित वकील गोपालप्रसाद के पुत्र शंकर से करना चाहते हैं। शंकर बी०एस-सी० करने के बाद लखनऊ में ही मेडिकल कॉलेज़ में पढ़ता है। उसकी रीढ़ की हड्डी में कुछ दोष है, इसलिए वह सीधा नहीं बैठ सकता। गोपालप्रसाद अपने बेटे के लिए अधिक पढ़ी-लिखी बहू नहीं चाहते। उनका कहना है–"**मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उसके नखरों को। बस हद-से-हद मैट्रिक पास होनी चाहिए।**" हाँ, बहू का सुंदर होना उनके लिए निहायत ज़रूरी है। चाहे पाउडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही।

उमा के पिता का लड़के वालों से उमा की पढ़ाई के विषय में झूठ बोलना–उमा की माँ उमा से बार-बार पाउडर आदि लगाकर सजने-सँवरने को कहती है, परंतु उमा इसे पसंद नहीं करती। वह साधारण रूप में गोपालप्रसाद के सामने आती है। गोपालप्रसाद उससे बातचीत करके, चाल आदि देखकर, संगीत सुनकर तथा पेंटिंग-सिलाई आदि की जानकारी लेकर प्रसन्न होते हैं, परंतु इनाम आदि जीतने के प्रश्न पर उमा मौन हो जाती है; क्योंकि उसके पिता ने लड़की को कम पढ़ा-लिखा ही बताया था। उमा की आँखों पर लगे चश्मे को देखकर पिता-पुत्र दोनों चौंक पड़ते हैं। गोपालप्रसाद पूछते हैं–"**पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?**" इस पर रामस्वरूप ज़रा सकपकाकर उत्तर देते हैं–"**जी, वह तो······वह······पिछले महीने में इसकी आँखें दुःखनी आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।**"

लड़के वालों को उमा का करारा जवाब–पिता के झूठ के सामने पुत्री भी निरुत्तर रह जाती है, परंतु गोपालप्रसाद के बार-बार यह कहने पर कि ज़रा इसे भी मुँह खोलना चाहिए, उमा हल्की, लेकिन मजबूत आवाज़ में कहती है–"**जब कुर्सी-मेज़ बिकती है, तब दुकानदार कुर्सी-मेज़ से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ़ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना·····।**" उमा की यह बात सुनकर पिता रामस्वरूप उसे बोलने से रोकते हैं, परंतु उमा अपने मन की सब बात कह लेना चाहती है। वह कहती है–"**क्या लड़कियों के दिल नहीं होता······आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं? और ज़रा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे और वहाँ से कैसे भगाए गए थे!**" लड़कियों के होस्टल की बात सुनकर गोपालप्रसाद समझ गए कि उमा वहाँ पढ़ी है; अतः उमा को बताना पड़ा कि उसने बी०ए० पास किया है। गोपालप्रसाद गुस्से में भरकर अपनी छड़ी ढूँढ़ते हुए उठ खड़े हुए और बोले–"**झूठ का भी कुछ ठिकाना है।**" उनको जाता देखकर उमा पुनः बोल पड़ी–**ज़रूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी है भी या नहीं–यानी बैकबोन, बैकबोन!**

समस्याओं का निराकरण करता एकांकी–इस प्रकार संपूर्ण एकांकी वर एवं वधू दोनों पक्षों की विविध समस्याओं को उजागर करता है। सबसे पहली बात है कि अयोग्य वर के समक्ष भी कन्यापक्ष को झूठ बोलना पड़ता है। दूसरे वरपक्ष वाले अपने दोष न देखते हुए कन्या के दोषों पर ही विशेष ध्यान देते हैं। इस सबके मूल में दहेजरूपी दानव का विकराल रूप ही दृष्टिगत होता है। दहेज न दे पाने के कारण कन्या का पिता वर के बड़े-से-बड़े दोष व कमी को भी अनदेखा कर देता है और जैसे भी हो बेटी का विवाह कर मुक्त हो जाना चाहता है।

माथुर जी ने बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से दोनों पक्षों की भावनाओं का चित्रण करते हुए एकांकी को सुगठित एवं रोचक रूप प्रदान किया है; अतः प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु रम्य, हृदयस्पर्शी तथा प्रभावशाली है।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

प्रश्न 1 : रामस्वरूप और गोपालप्रसाद बात-बात पर ''एक हमारा ज़माना था'''' कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान से करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?

उत्तर : रामस्वरूप और गोपालप्रसाद पुरानी पीढ़ी के लोग हैं। उन्हें अपना बीता हुआ समय ही अच्छा लगता है। इसी कारण वे बात-बात पर अपने समय की तुलना वर्तमान से करते रहते हैं। उनका इस प्रकार की तुलना करना तर्कसंगत नहीं है; क्योंकि समय परिवर्तनशील है और उस परिवर्तन के साथ अपने आचार-व्यवहार में परिवर्तन अनिवार्य होता है। यदि यह परिवर्तन न होगा तो जीवन जड़ हो जाएगा; अतः इस परिवर्तन को सहज रूप से स्वीकार करना चाहिए। अपने पुराने समय को अच्छा और नए समय को बुरा कहना भी उचित नहीं है; क्योंकि हर समय का अपना खान-पान, रहन-सहन और चलन होता है।

प्रश्न 2 : रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्चशिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को प्रकट करता है?

उत्तर : रामस्वरूप ने अपनी बेटी उमा को उच्चशिक्षा दिलाई है, परंतु विवाह के लिए उसे छिपाना उनकी मज़बूरी है। लड़की के पिता को भावी वरपक्ष की इच्छानुसार चलना पड़ता है। गोपालप्रसाद अधिक शिक्षित कन्या नहीं चाहते थे, इसलिए रामस्वरूप को अपनी पुत्री की शिक्षा को छिपाना पड़ा। वे विवशतावश ही ऐसा करते हैं।

प्रश्न 3 : अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?

उत्तर : अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप अपनी बेटी उमा से अपेक्षा कर रहे थे कि वह सीधी-सादी, चुप रहने वाली, कम पढ़ी-लिखी लगने वाली लड़की की तरह व्यवहार करे। उनका ऐसा सोचना उचित नहीं है। लड़की कोई भेड़-बकरी या मेज़-कुर्सी नहीं है। उसके भी दिल होता है। उसका उच्चशिक्षा पाना कोई अपराध नहीं है; अतः वह शिक्षित लड़की जैसा ही व्यवहार करेगी। एक पढ़ी-लिखी और सभ्य लड़की को अनपढ़ और असभ्यों जैसा व्यवहार करने के लिए विवश करना उसके साथ घोर अत्याचार है। अतः रामस्वरूप का अपनी शिक्षित बेटी से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा करना उचित नहीं है।

प्रश्न 4 : गोपालप्रसाद विवाह को 'बिजनेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्चशिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर : हमारे विचार से गोपालप्रसाद और रामस्वरूप दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं; क्योंकि गोपालप्रसाद विवाह की पवित्रता को नहीं समझते। वे इसे 'बिजनेस' की तरह लेते हैं और सौदा तय करने से पहले अनेक प्रकार की जाँच-पड़ताल करते हैं।

रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्चशिक्षा को छिपाते हैं। उन्हें ऐसी जगह रिश्ते की बात चलानी ही नहीं चाहिए थी, जहाँ लड़की की शिक्षा की कद्र नहीं। वे सबकुछ जानते हुए भी अपनी पढ़ी-लिखी लड़की को दकियानूसी और पुराने विचारों वाले दहेज के लालची लोगों के हाथों में सौंपना चाहते हैं; अतः हमारी दृष्टि में वे भी एक अपराधी हैं।

प्रश्न 5 : ''आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं'''' उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है?

उत्तर : उमा शंकर की निम्नलिखित कमियों की ओर संकेत करना चाहती है–

(i) 'रीढ़ की हड्डी' मजबूती का प्रतीक है। शंकर में किसी भी प्रकार की मजबूती नहीं है।

(ii) वह शारीरिक रूप से कमज़ोर है; क्योंकि उसकी कमर झुकी हुई है।

(iii) वह वैचारिक रूप से पिछड़ा और कमज़ोर है। पुराने विचारों का समर्थक है और दूसरों की हाँ-में-हाँ मिलाने वाला है।

(iv) वह चरित्रहीन भी है। लड़कियों के छात्रावास का चक्कर लगाते हुए पकड़ा गया था।

(v) वह पढ़ाई में भी कमज़ोर है; क्योंकि एक साल की पढ़ाई को दो-दो सालों में पूरा करता है।

प्रश्न 6 : शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की–समाज को कैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है। तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : समाज को उमा जैसी लड़की की आवश्यकता है। उमा के व्यक्तित्व में साहस है। वह स्पष्टवादी है। वह समाज के तथाकथित ठेकेदारों की पोल खोलने में सक्षम है। वह शिक्षित और समझदार लड़की है। ऐसा व्यक्तित्व समाज को उन्नति की ओर ले जाता है।

शंकर शारीरिक रूप से अक्षम, चरित्रहीन और दब्बू युवक है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक नहीं है। समाज को ऐसे युवकों की आवश्यकता नहीं है। ऐसा व्यक्तित्व समाज को पतन के गर्त में ले जाता है।

प्रश्न 7 : 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक को प्रतीकात्मक अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। जिस प्रकार व्यक्ति के शरीर के गठन एवं संतुलन में रीढ़ की हड्डी का ही सर्वाधिक महत्त्व होता है, उसी प्रकार किसी व्यक्ति का अच्छा व्यक्तित्व एवं चरित्र भी समाज की रीढ़ की हड्डी के समान ही होता है। व्यक्तित्वहीन अथवा चरित्रहीन व्यक्ति का समाज में वही स्थान होता है, जो शारीरिक दृष्टि से बिना रीढ़ वाले व्यक्ति का।

इस एकांकी के अंतर्गत शंकर को एक ऐसे ही पात्र के रूप में दर्शाया गया है, जिसकी रीढ़ की हड्डी तो विकारग्रस्त है ही, अपने व्यक्तित्व एवं चरित्र की दृष्टि से भी वह एक निम्नकोटि का युवक है। यह शीर्षक उसके दोषपूर्ण व्यक्तित्व एवं चरित्र को उजागर करता है और संपूर्ण कथावस्तु को उसी पर केंद्रित करता है। उसकी न तो अपनी कोई विचारधारा है और न ही अपना कोई अस्तित्व। अपने जीवन संबंधी प्रश्न पर स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने, अपनी राय को दृढ़तापूर्वक व्यक्त करने अथवा गलत बात का प्रतिरोध करने का लेशमात्र भी साहस उसमें नहीं है। वह प्रत्येक दृष्टि से अपने पिता पर ही आश्रित है। रीढ़ की हड्डी विकारग्रस्त होने के कारण वह कमर झुकाकर ही बैठ पाता है। इस प्रकार वह शारीरिक दृष्टि से भी विकारग्रस्त है।

इस प्रकार 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का केंद्रबिंदु शंकर ही है। उसकी मानसिक, शारीरिक एवं भावात्मक स्थिति को ही एकांकी के आधार पर स्पष्ट किया गया है। अंत में उमा का यह कथन कि **''घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं''** इस शीर्षक की सार्थकता को और भी स्पष्ट कर देता है।

अतः प्रस्तुत एकांकी के लिए 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक ही पूर्णतः सार्थक है।

प्रश्न 8 : कथावस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?

उत्तर : मुख्य पात्र वह होता है, जिसके माध्यम से लेखक अपने उद्देश्य की पूर्ति करता है तथा जो सारी कथावस्तु का केंद्र-बिंदु होता है। कथावस्तु के आधार पर हम उमा को 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं। इसका कारण यह है कि उमा के माध्यम से ही एकांकीकार अपनी बात प्रस्तुत कर रहा है। उमा द्वारा व्यक्त विचार वास्तव में लेखक के अपने ही विचार हैं। उमा अपने सशक्त व्यक्तित्व का परिचय देकर अन्य सभी पात्रों पर भारी पड़ती है। कथावस्तु का सारा आयोजन उसी के लिए होता है। उमा एकांकी की मुख्य पात्र है, अन्य पात्रों की भूमिका का ताना-बाना उसके ही चारों ओर बुना गया है।

प्रश्न 9 : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के आधार पर रामस्वरूप के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : रामस्वरूप के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) **विवश पिता**–रामस्वरूप एक विवाह योग्य युवा लड़की का पिता है और किसी भी प्रकार से उसका विवाह कर देना चाहता है। इसके लिए वह उसकी उच्चशिक्षा को भी छिपा लेता है।

(ii) **मज़ाकिया स्वभाव**–वह मज़ाकिया स्वभाव का है। इसलिए अपनी पत्नी के साथ मज़ाक करता हुआ दिखाई देता है।

(iii) **हीनभावना से ग्रस्त**–वह हीनभावना से ग्रस्त है। लड़की का पिता होने के कारण स्वयं को लड़के वालों से हीन समझता है। अपने आप को गोपालप्रसाद का सेवक बताता है।

(iv) **स्त्री-शिक्षा का समर्थक**–वह स्त्री-शिक्षा का समर्थक है। पत्नी के विरोध करने पर भी अपनी बेटी को उच्चशिक्षा दिलवाता है।

प्रश्न 10 : गोपालप्रसाद के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : गोपालप्रसाद के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) **स्त्री-शिक्षा का विरोधी**–गोपालप्रसाद स्त्री-शिक्षा का विरोधी है। वह स्वयं एक वकील है तथा अपने लड़के को डॉक्टर की पढ़ाई करा रहा है, लेकिन लड़के के लिए अनपढ़ या बहुत कम पढ़ी-लिखी लड़की चाहता है।

(ii) **दकियानूसी विचारों वाला**–वह पुराने विचारों वाला और रूढ़िवादी है। वह अपने ज़माने को अच्छा और नए ज़माने को बुरा बताता है।

(iii) **दहेज का लालची**–वह दहेज का लालची है। आते ही रामस्वरूप के घर की हैसियत आँकता है। वह विवाह को 'बिजनेस' मानता है।

(iv) **चालाक और वाक्पटु**–वह बहुत चालाक है। अपने लड़के की सारी कमियों को छिपा लेता है और बातों-ही-बातों में उमा की सारी खूबियाँ जान लेता है।

प्रश्न 11 : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का क्या उद्देश्य है? लिखिए।

उत्तर : इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य स्त्री की शिक्षा, स्वतंत्रता और सम्मान के महत्त्व को प्रतिपादित करना है। इसमें लेखक बताना चाहता है कि उमा जैसे साहसी, सुशिक्षित और प्रगतिशील विचारों वाले व्यक्ति समाज को उत्थान की ओर ले जाते हैं, जबकि शंकर और गोपालप्रसाद जैसे दकियानूसी व्यक्ति समाज का पतन करते हैं। हमारे समाज में विवाह योग्य युवा लड़की के विवाह को लेकर एक पिता के सामने जो समस्याएँ आती हैं, उन्हें दर्शाना भी एकांकी का उद्देश्य है।

प्रश्न 12 : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के आधार पर उमा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर : उमा के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) **श्रृंगार में अरुचि**–उमा श्रृंगार अथवा सजने-सँवरने में ज़रा भी रुचि नहीं रखती। उसकी माँ उसे बार-बार पाउडर आदि लगाकर तैयार होने के लिए कहती है, परंतु वह यह सब पसंद नहीं करती। उसकी माँ प्रेमा उसके पिता से कहती है–"**मैंने तो पौडर-वौडर उसके सामने रक्खा था। पर उसे तो इन चीज़ों से न जाने किस जन्म की नफ़रत है।**"

(ii) **आज्ञाकारी**–उमा शंकर से विवाह न करना चाहते हुए भी माता-पिता की आज्ञा से पान की तश्तरी लेकर गोपालप्रसाद और शंकर के सामने प्रस्तुत होती है। उसके इस कार्य से उसका आज्ञाकारी होने का गुण प्रकट होता है।

(iii) **शिष्ट एवं शालीन**–उमा गोपालप्रसाद के सामने पूर्णरूपेण शिष्टता एवं शालीनता प्रदर्शित करती है। गोपालप्रसाद के कहने पर वह अपने बाजे के पास तख्त पर बैठ जाती है। उसे देखकर गोपालप्रसाद संतुष्ट होकर कहते हैं–"**चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छवि है।**"

(iv) **कार्यकुशल एवं संगीतप्रिय**–उमा को संगीत में विशेष रुचि है। गोपालप्रसाद के कहने पर वह सितार उठाकर मीरा का एक प्रसिद्ध भजन 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' सुनाती है। स्वर से ज्ञात होता है कि उसे गाने का भी अच्छा ज्ञान है। गोपालप्रसाद भी उसकी प्रशंसा करते हैं। इसके बाद वे उसकी पेंटिंग व सिलाई आदि की चर्चा करते हैं, जिससे उमा की कार्यकुशलता का परिचय मिलता है।

(v) **प्रगतिशील विचारों वाली एवं स्वाभिमानी**–उमा आधुनिक युग की सुशिक्षित कन्याओं का प्रतिनिधित्व करती है। माता-पिता उसकी उच्चशिक्षा को छिपाकर एक अयोग्य लड़के से उसका विवाह करना चाहते हैं, परंतु वह इसे स्वीकार नहीं कर पाती। उसके व्यवहार में नारी-जागरण का स्वर स्पष्ट परिलक्षित होता है। वास्तव में जगदीशचंद्र माथुर ने उमा के चरित्र में निर्भीकता और दृढ़ता का समावेश करके यह सिद्ध कर दिया है कि आजकल की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ अपने भविष्य के प्रति सजग हैं।

प्रश्न 13 : अपने बेटे-बेटियों के विवाह के लिए लोग किस तरह के आडंबर करते हैं? 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : अपने बेटे-बेटियों के विवाह के लिए लोग तमाम झूठ और आडंबरों का सहारा लेते हैं। 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में अगर हम देखें तो लड़की उमा के माता-पिता दिखावे के लिए ही बैठक में सितार और हारमोनियम रखवाते हैं। उमा की माँ प्रेमा तो इस मामले में कुछ ज़्यादा ही सोचती है। उसका तो मानना है कि लड़की चाहे कितनी ही सुंदर हो, बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है। उमा के चश्मा लगाने की बात को वे झूठ बोलकर छिपाते हैं कि पिछले महीने आँखें दुःखनी आ गई थीं, इसलिए कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है। उमा के माता-पिता उमा की उच्चशिक्षा की बात भी छिपाते हैं; क्योंकि वरपक्ष बहुत पढ़ी-लिखी बहू नहीं चाहता है। इसी प्रकार लड़के का पिता गोपालप्रसाद अपने बेटे शंकर के दुश्चरित्र होने की बात छिपाता है और स्वयं को बड़ा सभ्य और उच्चस्तरीय दिखाता है।

प्रश्न 14 : अपनी कन्याओं के विवाह के समय यदि माता-पिता अपनी वास्तविकता को सामने रखते हुए संबंध निश्चित करें, तो कन्या के जीवन को सुखी बनाया जा सकता है। 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : अपनी कन्याओं के विवाह के समय यदि माता-पिता अपनी वास्तविकता को सामने रखते हुए संबंध निश्चित करें तो कन्या के जीवन को सुखी बनाया जा सकता है। मगर आजकल के माता-पिता वरपक्ष की इच्छाओं का ध्यान रखते हुए अनेक प्रकार के झूठ बोलते हैं और विवाहोपरांत वास्तविकता के सामने आने पर कन्या का जीवन दूभर हो जाता है। 'रीढ़ की हड्डी' में लड़के के

पिता गोपालप्रसाद और लड़का शंकर कम पढ़ी-लिखी बहू चाहते हैं और इस बात को ध्यान रखते हुए कन्या उमा के पिता रामस्वरूप यह झूठ बोलकर संबंध निश्चित करना चाहते हैं कि उनकी बेटी सिर्फ़ मैट्रिक पास है। उसकी आँखों पर चश्मा पढ़ने की वजह से नहीं, बल्कि दुःखनी आने की वजह से लगा है। उमा के बी०ए० पास होने की बात उजागर होने पर यह संबंध जुड़ने से पूर्व ही टूट जाता है। यदि यह विवाह हो जाता तो निश्चय ही विवाहोपरांत यह संबंध टूटता, तब उमा के लिए कितनी दुःखद स्थिति होती, वह अकल्पनीय है। इसलिए विवाह-संबंध स्थिर करते समय सभी बातें स्पष्ट होनी चाहिए। जिससे कन्या का जीवन सुखी रहे।

प्रश्न 15 : उमा के चुप्पी तोड़ने को आप कहाँ तक उचित मानते हैं?

उत्तर : उमा के चुप्पी तोड़ने को मैं सब प्रकार से उचित मानता हूँ; क्योंकि अहंवादी लोगों से संबंध न जोड़ना ही अच्छा है। जो लोग महिलाओं को दबाकर रखना चाहते हैं; उन्हें घर की चहारदीवारी में बंद रखना चाहते हैं, ऐसे लोगों के साथ संबंध जोड़ना ज़िंदगीभर के लिए कष्ट मोल लेना है।

प्रश्न 16 : संतानों के विवाह के समय संबंध निश्चित करते समय यदि माँ-बाप पसंद-नापसंद का निर्णय लड़के-लड़की पर छोड़ दें, तो शायद परिणाम ज़्यादा सुखद हों। 'रीढ़ की हड्डी' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर : संतानों के विवाह के समय संबंध स्थिर करते समय यदि माँ-बाप पसंद-नापसंद का निर्णय लड़के-लड़की पर छोड़ दें, तो परिणाम ज़्यादा सुखद होने की आशा रहती है; क्योंकि जीवन तो लड़का-लड़की को एक-दूसरे के साथ व्यतीत करना होता है, उनकी आपसी समझ ही उनके जीवन को सुखद बना सकती है, इसलिए माता-पिता को अपने निर्णय उनके ऊपर नहीं थोपने चाहिए। 'रीढ़ की हड्डी' में उमा के माता-पिता उमा की इच्छा के विपरीत अपना निर्णय उस पर थोपना चाहते हैं, जबकि उमा स्त्री का सम्मान न करने वालों के साथ संबंध जोड़े जाने के विरुद्ध है। वह तो संबंध जोड़े जाने से पूर्व ही विरोध का स्वर मुखर करके अपने जीवन को बर्बाद होने से बचा लेती है।

प्रश्न 17 : उमा ने अपनी बेइज़्ज़ती का बदला किस प्रकार लिया?

उत्तर : उमा ने अपनी बेइज़्ज़ती का बदला लड़के शंकर के दुश्चरित्र होने का उद्घाटन करके लिया और उसके पिता गोपालप्रसाद पर करारा व्यंग्य भी किया कि ''घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाड़ले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं–यानी बैकबोन, बैकबोन!''

प्रश्न 18 : 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर बताइए कि स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज में लड़कों की क्या भूमिका होनी चाहिए?

उत्तर : जिस तरह शरीर में रीढ़ की हड्डी शरीर को सीधा रखती है, ठीक ऐसी ही भूमिका समाज के सदस्यों की भी होती है। शंकर जैसे युवक रीढ़-विहीन हैं; क्योंकि उनका व्यक्तित्व चरित्रहीन और परजीवी है, तभी शंकर को बिना 'बैकबोन' का कहा जा रहा है। वह स्वयं चरित्रहीन है तथा कम पढ़ी-लिखी पत्नी की इच्छा में अपने पिता का साथ देता है। ऐसे लड़कों के कारण समाज तथा देश कभी भी तरक्की नहीं कर सकता। पढ़े-लिखे लड़कों को अपने माता-पिता को समझाना चाहिए। एक परिवार तथा समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए लड़की की उच्च शिक्षा बहुत काम आती है। माता-पिता की आज्ञा मानना संतान का कर्तव्य है, पर गलत आज्ञा स्वीकार नहीं करनी चाहिए। उन्हें प्रगतिशील विचार अपनाने की प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी, तभी अनेक समस्याओं से बचाव होगा।

प्रश्न 19 : 'रीढ़ की हड्डी' जैसे एकांकी और नाटकों से क्या समाज पर कोई प्रभाव पड़ेगा? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का मुख्य उद्देश्य लड़कियों की उच्च शिक्षा के समर्थन की आवाज़ को बुलंद करना है। इस एकांकी में उन लोगों की कलई खोली गई है, जो लड़कियों को भेड़-बकरियों या फ़र्नीचर (कुर्सी-मेज़) मानते हैं। यह एकांकी लड़कियों के स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा करता है। यह एकांकी दोमुँहे व्यक्तित्व वाले लोगों का पर्दाफ़ाश करता है और चरित्रहीन लोगों को रीढ़-विहीन बताता है। ऐसे एकांकी और नाटकों से समाज पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। लड़कियों को अपने अधिकारों की जानकारी होगी। वे सर्तक होंगी तथा कभी भी किसी के द्वारा प्रताड़ित नहीं होंगी।

प्रश्न 20 : सिद्ध कीजिए कि 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के पात्र उमा के कथन में लड़कियों की पीड़ा प्रकट होती है।

उत्तर : लड़के के पिता गोपालप्रसाद तरह-तरह से उमा की जाँच-पड़ताल करते हैं। सबसे पहले तो वह चश्मा देखकर चौंक उठते हैं कि कहीं उमा पढ़ी-लिखी तो नहीं है। वह उससे गाना गाने के लिए कहते हैं और पेंटिंग'-वेंटिंग, सिलाई-कढ़ाई आदि के बारे में भी पूछते हैं। इससे उमा को बहुत ठेस पहुँचती है। फिर जब उसके पिता रामस्वरूप उससे जवाब देने के लिए कहते हैं, तो वह कहती है–''क्या जवाब दूँ, बाबू जी! जब मेज़-कुर्सी बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज़ से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ़ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना·····।'' उमा के इस स्वर में एक तरह की पीड़ा है। वह पूछना चाहती है कि क्या लड़कियों का दिल नहीं होता? क्या उन्हें चोट नहीं लगती? क्या लड़कियों की स्थिति उन बेबस भेड़-बकरियों के समान होती है, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर ले जाता है। उमा के स्वर में उस पीड़ा की सहज ही अनुभूति होती है कि वर पक्ष को अपनी इज़्ज़त-बेइज़्ज़ती का तो इतना ख्याल रहता है, परंतु कन्या और कन्या पक्ष के मान-अपमान का तनिक भी ख्याल नहीं रहता है और एक वस्तु की भाँति लड़की को तरह-तरह से नाप-तोल कर देखा जाता है। इस प्रकार, उमा के कथन में लड़कियों की पीड़ा प्रकट होती है।

प्रश्न 21 : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किस समस्या को उठाया गया है? क्या आज भी हमें इस समस्या का भयंकर रूप दिखाई देता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में मुख्यतः स्त्री-शिक्षा एवं सफ़ेदपोश लोगों की रूढ़िवादिता की समस्या को उठाया गया है। इसी के माध्यम से स्त्री-अस्तित्व या स्त्री-व्यक्तित्व की समस्या भी उभरकर सामने आई है। समाज में रूढ़िवादी दृष्टिकोण बनाए रखने वाले लोग दोहरा व्यक्तित्व रखते हैं। घर के अंदर कुछ और घर के बाहर कुछ और, लड़कों के बारे में कुछ और तथा लड़कियों के बारे में कुछ और। दोहरा व्यक्तित्व रखने वाले ऐसे लोगों को बेनकाब करने की आवश्यकता है। यह समस्या पहले भी थी और आज भी विद्यमान है।

स्त्री-शिक्षा का विरोध संबंधी रूढ़िवादी दृष्टिकोण, जितना प्रबल पहले था, आज वह उतना प्रबल स्वरूप में नहीं दिखाई देता। आज लोगों में लड़के-लड़कियों की समानता संबंधी दृष्टिकोण में वृद्धि हुई है।

लोग लड़कियों को भी लड़कों जैसी ही शिक्षा एवं सुविधाएँ देने में पहले की अपेक्षा काफी उदार हुए हैं। लेकिन आज भी

लड़कियों को स्वतंत्र व्यक्तित्व वाला प्राणी मानने में अनेक लोगों को हिचक होती है। अभी भी अनेक लोग लड़कियों को एक 'वस्तु' के रूप में देखते हैं और लड़कियों का अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना उन्हें रास नहीं आता।

प्रश्न 22 : रामस्वरूप और गोपालप्रसाद दोनों पिता हैं। दोनों के गुणों का विश्लेषण करते हुए बताइए कि आप एक अच्छे पिता में कौन-कौन-से गुण देखना चाहते हैं?

उत्तर : रामस्वरूप उमा के पिता हैं। वे एक मज़बूर पिता लगते हैं, जो अपनी बेटी की शादी किसी भी कीमत पर शंकर जैसे लड़के से करवाना चाहते हैं। वे उमा की उच्च शिक्षा की बात को छिपाते हैं। उन्हें डर है कि उमा को देखने आने वाले लड़के तथा उसके पिता ने यदि उसे नापसंद कर दिया तो रिश्तेदार और यह समाज क्या कहेगा? वे अपनी बेटी को दिखावा करने तथा झूठ बोलने के लिए कहते हैं। इससे पता चलता है कि वे डरपोक, दकियानूसी तथा विवश पिता हैं।

गोपालप्रसाद **शंकर** के पिता हैं। लड़के के पिता होने के कारण उन्हें घमंड है। उन्हें ऐसी बहू चाहिए, जो कम पढ़ी-लिखी हो, जिस पर वे मनमानी कर सकें। उन्हें सुंदर बहू चाहिए तथा साथ में जीती-जगाती गुड़िया जैसी, जो कुछ सोचे नहीं। वे स्वार्थी तथा ढोंगी हैं। वे शादी को व्यापार मानते हैं, जिससे अपना मुनाफ़ा बना सके।

एक अच्छा पिता वही होता है, जो अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन करे। वह अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित रखे और कभी झूठ का सहारा नहीं ले। वह निडर, निस्वार्थी तथा स्वतंत्र विचारों का हो। वह बेटा, बेटी, दामाद या बहू के गुणों की कद्र करने वाला हो। वह गुणों को परखना जाने तथा उन्हें पर्याप्त महत्त्व दे।

प्रश्न 23 : 'गोपालप्रसाद के विचार आधुनिक समाज के लिए घातक हैं।' 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर : गोपाल प्रसाद पेशे से वकील है, किंतु लिंग भेद का शिकार है। वह पढ़ाई-लिखाई पर केवल लड़कों का अधिकार मानता है। इस तरह वह लड़कियों की पढ़ाई का विरोधी है। उसका कहना है कि लड़कियों का पढ़ना-लिखना, काबिल बनना आवश्यक नहीं है।

उसके अनुसार, 'लड़कियों को घर का काम कुशलतापूर्वक आना चाहिए। यदि लड़की पढ़-लिखकर योग्य बन गई और अंग्रेज़ी में अख़बार पढ़कर पॉलिटिक्स की बातें करने लगी तो घर की देखभाल हो चुकी।' उसकी यह सोच न केवल लड़कियों के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए बहुत घातक है। वह समाज की गली-सड़ी यथास्थितिवादी भावनाओं का प्रतिनिधि है। वह शादी जैसे मामले को भी व्यापार मानता है तथा दहेज का लोभी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि गोपालप्रसाद के विचार आधुनिक समाज के लिए घातक हैं।

प्रश्न 24 : 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर बताइए कि एक पिता को अपनी बेटी के भविष्य को सजाने-सँवारने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : 'रीढ़ की हड्डी' पाठ में रामस्वरूप ने अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाई, पर विवाह के समय उसे छिपाने की कोशिश की। यह उनकी मज़बूरी थी। लड़की के पिता को लड़के और उसके पिता की इच्छा के अनुसार चलना पड़ता है। गोपालप्रसाद उच्च शिक्षित बहू नहीं चाहते हैं और रामस्वरूप उनके लड़के से अपनी बेटी का रिश्ता तय करना चाहते हैं; अतः वे अपनी बेटी की उच्च शिक्षा की बात को छिपाते हैं। वे मज़बूरी के कारण ही ऐसा करते हैं। मेरी दृष्टि से एक पिता को अपनी बेटी के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए उसे उच्च शिक्षा दिलाकर अपने निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता भी देनी चाहिए। बेटी की उच्च शिक्षा पर पिता को गर्व होना चाहिए। उन्हें ऐसे लड़के से अपनी बेटी की शादी करनी चाहिए जो शिक्षित पत्नी चाहता हो, अपने निर्णय स्वयं लेता हो और जो लड़की तथा उसके गुणों की कद्र करे।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–*

1. आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ़ से कुछ सुझाव दीजिए।
2. 'अच्छा है, कुछ भी नहीं। कलम थी, वह भी चोरी चली गई। अच्छा है, कुछ नहीं–मेरे पास।'–मूवी कैमरा, टेप रिकॉर्डर आदि की तीव्र उत्कंठा होते हुए भी लेखक ने अंत में उपर्युक्त कथन क्यों कहा?
3. लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?
4. 'भारतीय माँ' से लेखिका का क्या आशय है?
5. 'मेरे संग की औरतें' पाठ में रेणु कौन थी? उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
6. हमारे समाज में आज भी अधिकतर लोग संतान के रूप में बेटे की कामना रखते हैं, ऐसे में पुराने जमाने की होते हुए भी लेखिका की परदादी का पतोहू के बच्चे के रूप में लड़की की मन्नत माँगना क्या सिद्ध करता है?
7. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?
8. अपने बेटे-बेटियों के विवाह के लिए लोग किस तरह के आडंबर करते हैं? 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
9. सिद्ध कीजिए कि 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के पात्र उमा के कथन में लड़कियों की पीड़ा प्रकट होती है।
10. 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर बताइए कि एक पिता को अपनी बेटी के भविष्य को सजाने-सँवारने के लिए क्या करना चाहिए?
11. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंध को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?
12. परिवार में हिंदी का वातावरण न होने पर भी महादेवी की रुचि हिंदी में कैसे हो गई?